ECOLOGIES OF THE
NEW
MATTER, MIND & BODY

Anthology of essays presented in the MESMAC International Conference 2018

MESMAC INTERNATIONAL CONFERENCES
www.mesmac.in

ISBN 978-93-5288-770-5

समकालीन हिन्दी साहित्य में विमर्श के विविध आयाम

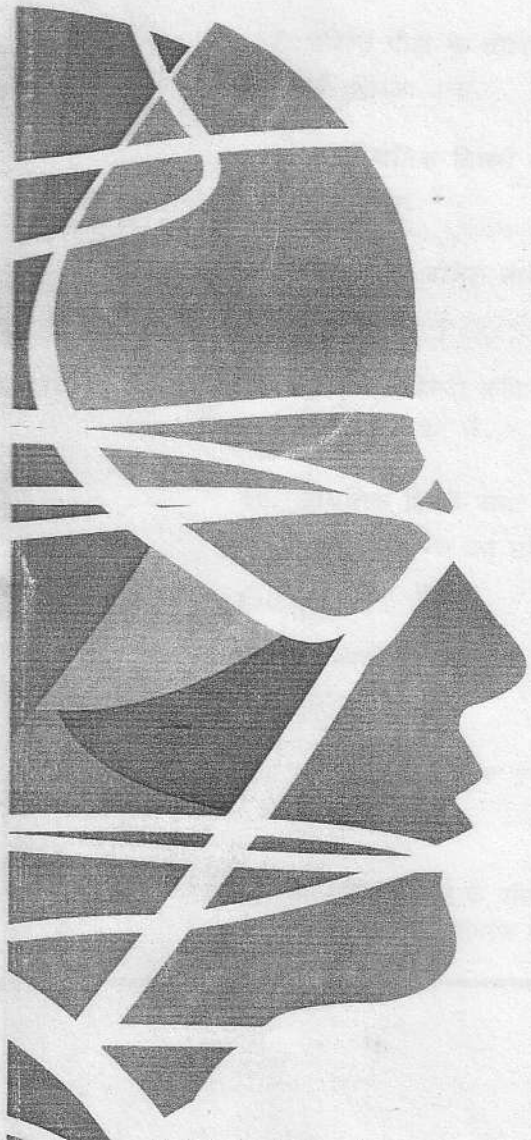

MES Mampad College (Autonomous)
(Accredited by NAAC with A Grade)

56. हरीचरन प्रकाश की कहानियों में पारिस्थितिक सजगता 232-234
एन.आर.सेतुलक्ष्मी

57. समकालीन कहानी में लोकतन्त्र विमर्श :दलित कहानियों के संदर्भ में 235-237
विष्णु तंकप्पन

58. तीसरा लिंग विमर्श के संदर्भ में 'तीसरी ताली' 238-241
डॉ. इब्राहिम कुट्टी

59. आदिवासी विमर्श और "ग्लोबल गाँव के देवता" 242-246
डॉ. सुरेश ए.

60. हिन्दी भक्ति साहित्य में दलित विमर्श -संत रविदास के विशेष संदर्भ में 247-248
डॉ. जिनो पी वर्गीस

61. साठोत्तर हिन्दी कविता में राजनीतिक विमर्श 249-252
सजीवकुमार . एस

62. वरिष्ठ पीढ़ी के शोषित पीड़ित अस्तित्व :समकालीन उपन्यासों में 253-254
डॉ. शैलजा . के

63. पारिस्थितिक विमर्श के परिप्रेक्ष्य में 'अनबीता व्यतीत' 255-257
हीरा चंद्रन

64. शिक्षा और दलित नारी के बीच का संकट :दलित कहानियों के विशेष संदर्भ में 258-262
षिनी. एम

65. आधुनिक हिन्दी कविता का समकालीन विमर्श 263-270
डॉ. शमला के. ए

66. आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य में नव उपनिवेशवाद : 271-277
'वारेन हेस्टिंग्स का सांड' के विशेष संदर्भ में
डॉ. सुमा अजित

67. समकालीन हिन्दी महिला कथाकारों के आत्मकथा साहित्य में स्त्री विमर्श 278-291
पारुल त्रिवेदी

68. 'आखिरी अदाई दिन 'उपन्यास में स्त्री विमर्श 292-296
डॉ. प्रीता राजेश

69. सांस्कृतिक विमर्श के परिप्रेक्ष्य में रमणिका गुप्ता की यात्रा–संस्मरण 'लहरों की लय' 397-300
(चुनिंदे यात्रा – संस्मरण के विशेष सन्दर्भ में)
आतिरा .ए.एस

68.

'आखिरी अढ़ाई दिन' उपन्यास में स्त्री विमर्श

डॉ. प्रीता राजेश
सहायक आचार्या
हिन्दी विभाग
एम ई एस केवीएम कॉलेज वालांचेरी

समकालीन लेखकों में स्त्री विभर्श और स्त्री चेतना जैसे मुद्दों को लेकर काफी समय से बहस चल रही हैं और अब तो यह बहस और तेज हो गई हैं । स्त्री विमर्श का अर्थ हुआ-स्त्री को केन्द्र में रखकर समाज, संस्कृति, परपंरा एवं इतिहास का पुनरीक्षण करते हुए स्त्री को मानवीय दृष्टि से देखने की अनवरत प्रक्रिया ।

प्राचीन काल में भारत में मातृसत्तात्मक संस्कृ ति का प्रचलन था । भारतीय दर्शन में भी स्त्री को प्रकृतिरूपा माना गया हैं । वे प्रकृति और पुरुष के संयोग से ही सुष्टि की उपत्ति मानते हैं । अनकी दृष्टि में स्त्री पुरुष की अनुगामिनी नहीं बल्कि, सहगामिनी हैं । इतना ही नहीं परिवार में भी उसे महत्वपूर्ण एंव सम्माननीय स्थान प्राप्त था । गृहस्थी के मेरुदण्ड के रूप में उसे माना जाता हैं । परिवार तथा समाज में भी उसे अधिकार प्राप्त थे । परन्तु ऐसे कौन से कारण थे कि स्त्री का परिवारिक, समाजिक स्तर धीरे-धीरे गिरता गया, उसके सारे अधिकार छीन लिए गए, आर्थिक दृष्टि से वह पराधीन बनती गयी और विश्वभर में स्त्री सदैव पुरूषों की अधीनस्थता और अत्याचार को झेलने के लिए विवश रही । लेकिन आज भारतीय समाज में धीरे-धीरे परिवर्तन की शुरुआत हो गई हैं । आज की स्त्री अपनी आस्मिता, अस्तित्व , स्वायत्तता तथा अधिकार के प्रति जगरूक हैं । परंपरागत रूढियों, मान्यताओं, अंधविश्वासों, कुरीतियों एवं शोषण से वह स्वंय को मुक्त करना चाहती है । मनुष्य होने की न्यूनतम गरिमा से विहीन स्त्री को उसके स्वतंत्र जीवन अस्तित्व को परिचित करके प्रदीप्त करना ही स्त्री विमर्श का मूल उद्देय्य हैं ।

प्रख्यात अभिनेत्री मीनाकुमारी के जीवन पर मधुप शर्मा द्वारा रचित उपन्यास है 'आखिरी अढ़ाई दिन' । इस उपन्यास के माध्यम से लेखक ने हिन्दी फिल्म जगत की 'ट्रेजडी क्वीन' के वास्तविक जीवन की ट्रेजडी प्रस्तुत की है । मीनाकुमारी की कहानी अपनी भावनाओं और अपनों के अत्याचार से बंधी एक नारी की कहानी भी हैं ।

MESMAC
INTERNATIONAL
CONFERENCES
www.mesmac.in

ISBN 978-93-5288-770-5

ECOLOGIES OF THE
NEW
MATTER, MIND & BODY

Anthology of essays presented in the
MESMAC
International Conference 2018

समकालीन हिन्दी साहित्य में विमर्श के विविध आयाम

Dr. Ghafoor Memorial
M.E.S Mampad College (Autonomous)
(Accredited by NAAC with A Grade)
Mampad College P.O., Malappuram Dt. 676542
E-mail: info@mesmampad.org
www.mesmampad.org